

ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया विजन एंड चैलेंजेज

सम्पादक

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

द्वारा अग्रसारण संदेश

डॉ. संदीप कुमार शर्मा (निदेशक)

प्रो. एन.एस. भण्डारी (कुलपति)

डॉ. रमेश चन्द्र पुरोहित (प्राचार्य)

डॉ. आभा शर्मा (प्राचार्य)



N. B. Publications

Ghaziabad - 201102 (India)

Published By:

N. B. Publications

SF-1, A-5/3, D.L.F., Ankur Vihar,

Loni, Ghaziabad-201102, U.P. (India)

Phones : 8700829963, 9999829572

E-mail : nbpublications26@gmail.com

Sale Distributor By:

KUNAL BOOKS

4648/21, 1st Floor, Ansari Road,

Daryaganj, New Delhi - 110002.

Phones: 011-23275069, 9811043697

E-mail: kunalbooks@gmail.com

Website: www.kunalbooks.com

ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया : विजन एंड चैलेंजेज

TRANSFORMING INDIA : VISION AND CHALLENGES

© Editor

First Published : March 2022

ISBN: 978-93-91550-59-2

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

The opinions and views expressed are exclusively those of the authors and in no way the editors or the publisher is responsible for the same.

Published in India by N.B. Publications, and printed at **Trident Enterprises**, Noida, (U.P.)

भारतीय स्त्री : परम्परा और आधुनिकता के परिवार्य में

नेहा कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर।

संचार क्रांति एवं आर्थिक उदारीकरण के परिवर्तन की लहर ने सामाजिक सम्बन्धों की व्याख्या में व्यापक परिवर्तन किया है। समूचा विश्व सिमट कर एक गाँव बन गया है, बदलते युग में स्त्री की स्थिति भी बदलती है, परन्तु तेजी से बदल रहे समाज, संस्कृति और परिवार में महिला की स्थिति पहले के समान ही है। जैसे उसकी दादी-नानियाँ घरेलू उपकरणों से जूझती आयी है, स्त्री आज भी वैसे ही जूझ रही है। स्त्री इन सभी क्रियाकलापों को अपनी नियति मान कर शिरोधार्य कर लेती है और आजीवन पत्नीत्व का पालन करते हुए पति के कन्धे पर लदकर स्वर्ग जाने की कामना करती हुई सिधार जाती है। स्त्रियों को विरासत में ये सारी परम्परायें मिली हैं, वर्तमान में भी हर सुबह घड़ी की अलार्म के साथ उठकर पति व बच्चों के लिए करते-करते उसे इतना भी समय नहीं कि न्यूज-पेपर की हेडलाईन ही देख लें। बच्चों के कापी-किताब, खाने का डिब्बा, पानी की बोतल, पति के ऑफिस जाने के सारे इन्तजाम, मोजे से लेकर रूमाल, स्मार्टफोन और पेन एक-एक वस्तुओं को याद से पकड़ाना, अन्यथा कुछ भूल जाने पर उलहानों एवं कामचोर का मेडल बड़े आयोजन के साथ प्राप्त होता है। इन सारे ताने-बाने में आपाधापी रस्साकसी में स्वयं के लिए निकाली गई एक चाय की कप टेबल पर यथावत्

“स्वतंत्रता और समानता मानव का मौलिक अधिकार है, स्त्री को भी मनुष्य माना चाहिए। परम्परा ने इसका घोर अभाव था। परन्तु आधुनिकता से यह आशा की जा सकती है कि वह नारी के मानवीय सम्मान पर सहृदयपूर्वक विचार करे, ऐसे परिवेश का सजृन करें जहाँ पर सहचार हो, सहयोग हो, सद्भावना हो, स्नहे हो, परस्परपूरता हो, अन्योन्याश्रितता हो। स्त्री-पुरुष एक दूसरे के निमित्त समान रूप से मूल्यवान हो तभी एक स्वस्थ और संतुलित सामाजिक पर्यावरण का परिनिर्माण सम्भव हो पाएगा। इसी विश्वास के साथ.....

सन्दर्भ-सूची

1. भारतीय स्त्री सांस्कृतिक संदर्भ, पृ0 116
2. डॉ0 सविता भारद्वाज, रहना नहीं देश बेगाना, पृ0 129